लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

हिन्दी गद्य के विकास में द्विवेदी युग की भूमिका

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

Q. हिन्दी गद्य के विकास में द्विवेदी युग की भूमिका।

Ans) भारतेंदु के पश्चात हिन्दी गद्य धारा को महत्वपूर्ण मोड़ देने वाले आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सन् 1903 में सरस्वती पत्रीवन के संपादन के द्वारा गद्य के सुधार का महत्वपूर्ण कार्य किया उन्होने साहित्यकारो का ध्यान हिन्दी गद्य की त्रुटियो की ओर आकर्षित किया। द्विवेदी जी कि प्रेरणा और मार्गदर्शन पा कर गद्य की विविध विधायों में उच्च कोटि के साहित्य का निर्माण हुआ।

* द्विवेदी युग में निबंध साहित्य का विशेष विकास हुआ। विचारात्मक, भावनात्मक, कलात्मक, वर्णात्मक आदि सभी प्रकार के निबंध द्विवेदी युग में लिखे गए, द्विवेदी जी स्वयं तो श्रेष्ठ निबंधकार तो थे ही साथ ही अध्यापकपूर्ण सी, माधवप्रसाद मिश्र बालमुकुन्द गुप्त ने भी इस युग में श्रेष्ठ निबंध लिखे।

हिन्दी कहानी का वास्तविक विकास द्विवेदी युग से ही शुरु हुआ। सरस्वती पत्रिका में अनेक मौलिक कहानियाँ प्रकाशित हुई किशोरी लाल गोस्वामी, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी बंगाम हिला (दुलाईविला) आदि इस युग की प्रसिद्ध कहानी है।

द्विवेदी युग मे मौलिक और अनुदित नाटकों कि भी रचना हुई इस युग में साहित्य से जुड़े साहित्यिक नाटक लिखे गए।

इनमें से बदरीनाथ भट्ट के ऐतिहासिक नाटक 'दुर्गावती', पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र के नाटक 'महात्मा ईसा', मोहन शुक्ल के नाटक 'महाभारत को शेष लोकप्रियता प्राप्त हुई।

कौशिक, सुदर्शन, प्रेमचंद आदि ने भी नाटक लिखे जिसमें से माखन-लाल चतुर्वेदी के नाटक "कृष्णा-अर्जुन युद्ध को छोड़कर अन्य किसी नाटक को विशेष सफलता नहीं मिली।

हिन्दी में जिस आलोचना का सूत्रपात भारतेंदु युग में हुआ, द्विवेदी युग में उसका विकास हुआ। द्विवेदी युग में आलोचना कि कई नयी पद्धतियाँ विकसित हुई। जगन्नाथ भानु और लाला भगवान दिन ने संस्कृत काव्य शास्त्र के अनुकरण पर सैद्धांतिक आलोचना के ग्रंथ लिखे। वही दूसरी ओर पद्मसिंह शर्मा और मिश्र बंधुओं ने हिन्दी 'नवरत्न' और मिश्रबंधु विनोद की रचना कर हिन्दी में पहली बार तुलनात्मक आलोचना की शुरुआत की। जगन्नाथदास रत्नाकर जैसे आलोचकों में पाश्चात्य परचात समीक्षाओं के आलोचनात्मक कृतियों का अनुवाद किया।

द्विवेदी युग के सामाजिक उपन्यासों में तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत हुआ। इस युग के सामाजिक उपन्यासकारों में लज्जाराम शर्मा, किशोरीलाल

गोस्वामी, ब्रजनंदन सहाय, राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह, उल्लेखनीय है।

भारतेन्दु युग में काव्य की भाषा थी ब्रजभाषा और जनता की भाषा खड़ी बोली थी। इस अंतर्विरोध को समाप्त करना था एक क्रांति की आवश्यकता थी और द्विवेदी जी ने "लीप" के साथ यह कार्य पूरा किया। उन्होंने मैथिली शरण गुप्त, रामचरित उपाध्याय और लोचन प्रसाद पांडेय ये तीन उच्चकोटि के कवि दिए। उनके लोह अनुशासन का प्रभाव हरिऔध जी पर भी पड़ा। "भारत-भारती" "प्रियप्रवास" तथा अन्य कलात्मक काव्य द्विवेदी युग की चिंतन धारा को स्पष्ट करते हैं "प्रियप्रवास" की राधा रीतिकालीन राधा के विरुद्ध एक सर्वथा नवीन मानव मूल्यों को प्रस्तुत करने वाली नायिका है। "कृष्ण" थोड़े लौकिक लगने पर भी अधिक बुद्धि संगत और परोपकारी जननायक है। साकेत की "उर्मिला" और "यशोधरा" की गोपा वस्तुतः द्विवेदी जी की काव्य चेतना की प्रतिमूर्तियां है। रीतिकालीन "भोग्या" नारी की मूर्ति से यह नवीन मूर्ति कितनी अधिक प्रेरणाप्रद भव्य और सुन्दर है। इसीप्रकार देश की गरीबी पर द्विवेदी युग में सतही तौर पर ही सही परंतु मार्मिक चित्रण मिलते हैं।